2

विश्वास त्याग:
इसका कारण व उपचार

(3:1–4:13)

इब्रानियों की पुस्तक मसीही लोगों के एक समूह को पीछे हटने से रोकने के लिए लिखी गई (उदाहरण के लिए देखें, 2:1; 6:4–6; 10:26–31)। इब्रानियों 3 और 4 में लेखक सीधे मुद्दे पर आ गया। उसने विश्वासत्याग के विषय पर एक प्रवचन दिया। उसके पाठकों को उस प्रवचन की आवश्यकता थी; हमें भी उसकी आवश्यकता है। नये नियम के समय में कई मसीही लोग विश्वास से गिर जाते थे और आज भी बहुत से मसीही लोग विश्वास से गिर जाते हैं। किसी ने अनुमान लगाया है कि सुसमाचार की आज्ञा मानने वालों में से 50 प्रतिशत या इससे अधिक लोग अन्त में मसीह से गिर जाते हैं। विश्वासत्याग उस समय भी एक समस्या थी और आज भी एक समस्या है। इस समस्या को कैसे सुलझाया जा सकता है? इब्रानियों 3 और 4 अध्याय इस प्रश्न के कुछ उत्तर देते हैं।

इस पाठ में हम इब्रानियों के लेखक के प्रवचन की समीक्षा करके पूछना चाहते हैं कि वह हम पर कैसे लागू होता है।

प्रवचन

परिचय

प्रवचन का आरम्भ एक परिचय के साथ होता है जो अगली चर्चा के लिए मंच तैयार करता है। इब्रानियों 3:1–6 में हमें परिचय मिलता है। (इस वचन को पढ़ें।)

इन आयतों में लेखक ने मूसा और मसीह की तुलना करते हुए अपने पाठकों के लिए प्रवचन को तैयार किया। अभिप्राय यह है कि यदि मूसा और मसीह की तुलना हो सकती है तो इस्राएलियों की, जिनकी अगुआई मूसा करता था और कलीयिसा की जिनकी अगुआई मसीह करता है, भी तुलना हो सकती है।

लेखक ने ''उस प्रेरित और महा याजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो'' कहते हुए आरम्भ किया (3:1)। यीशु इस बात में ''प्रेरित'' है कि वह परमेश्वर का वचन मनुष्य तक लाने के लिए परमेश्वर का दूत है। हमारे ''महा याजक'' के रूप में वह हमारी आवश्यकताओं को परमेश्वर के सामने लाता है और हमारी ओर से परमेश्वर से विनती करता है।

हम और पढ़ते हैं कि मसीह इस बात में मूसा के जैसा है कि दोनों विश्वासयोग्य थे। परन्तु वह मूसा से वैसे ही बड़ा है जैसे घर का बनाने वाला उस घर से बड़ा होता है जिसे उसने बनाया

है (3:2, 3)। मूसा एक सेवक के रूप में विश्वासयोग्य था, जबकि मसीह घर के ऊपर पुत्र के रूप में विश्वासयोग्य था (3:5, 6क)।

हम आज वैसे ही परमेश्वर का घराना हैं (3:6ख) जैसे इस्राएल परमेश्वर का घराना होता था। इस कारण हमारे लिए इस्राएल की स्थिति सार्थक है।

वचन

फिर लेखक ने अपने प्रवचन के लिए भजन संहिता 95:7-11 से आयतें लेते हुए वचन दोहराया। (पढ़ें इब्रानियों 3:7-11.)

उद्देश्य कथन

वचन पाठ पढ़ने के बाद, लेखक ने कहा कि उसके पाठ का उद्देश्य कथन या विषय क्या है। (पढ़ें इब्रानियों 3:12-14.) इन कुछ शब्दों में उसने स्पष्ट किया कि वह अपने पाठकों को क्या करने का विश्वास दिलाना चाहता है। विशेषकर आयत 13 को देखें। इस आयत का हर वाक्यांश महत्वपूर्ण है:

''समझाते रहो'': यहां हमें जो होना चाहिए वह बनने और जो करना चाहिए वह करने का आग्रह करते हुए आनन्द से भरे शब्दों के साथ ज़बानी प्रोत्साहन देखने को मिलता है। विश्वास योग्य बने रहने के लिए हमें ऐसे ही प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

''एक-दूसरे को'': मसीहियत है ही ''एक-दूसरे'' का धर्म। यदि हम स्वयं विश्वासयोग्य हैं तो हमें दूसरों को विश्वासयोग्य बने रहने में सहायता करने की चिन्ता होनी चाहिए।

''हर दिन''[1]: हमें सप्ताह में एक बार, इकट्ठा होने पर ही नहीं, बल्कि हर रोज़ प्रोत्साहन देना आवश्यक है। मसीहियत ''इकट्ठा'' धर्म है; मसीही लोगों को एक-दूसरे के साथ प्रतिदिन संगति बनाए रखनी चाहिए।

''ऐसा न हो कि तुम में से कोई'': हमें एक भी सदस्य, यानी एक को भी गिरने नहीं देना चाहिए, यदि हम सहायता कर सकते हैं।

''कठोर हो जाएगा'': पाप में बने रहना मन को कठोर कर देता है। ऐसा होता है, इस कारण हमें एक-दूसरे को हर रोज़ समझाना और प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

''पाप के छल में'': यह वाक्यांश पाप की प्रकृति का अच्छा विवरण है। पाप धोखेबाज है। यह प्रतिज्ञा तो जीवन देने की करता है पर देता मृत्यु है!

हमें एक-दूसरे को हर रोज़ प्रोत्साहित करना क्यों आवश्यक है? ध्यान दें कि पाठ में एक ''यदि'' है। हम परमेश्वर के घराने के लोग हैं '' *यदि* हम साहस पर, ... अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें'' (3:6)। ''हम मसीह के भागी हुए हैं, *यदि* हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें'' (3:14)। यदि हम अपने धर्म को पकड़े रखने में नाकाम रहते हैं तो हम गिर जाएंगे। इस तथ्य से हमें ''प्रतिदिन एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने'' का कारण मिलना चाहिए।

मुख्य भाग

उद्देश्य के कथन के बाद प्रवचन का मुख्य भाग आता है। प्रवचन के मुख्य भाग में लेखक

ने दो बातें की। पहले तो उसने इस्राएलियों द्वारा ठहराए विश्वासत्याग का नमूना दिया। फिर उसने अपने पाठकों से उस नमूने को न मानने का आग्रह किया।

विश्वासत्याग के प्रदर्शन के रूप में इस्राएल। (पढ़ें 3:15-19.) इन आयतों में लेखक ने इस तथ्य के साथ आरम्भ किया कि वचन कहता है "उन्होंने मुझे क्रोध दिलाया" (3:15)। फिर उसने यह कहते हुए कि परमेश्वर को क्रोध दिलाने वाले लोग मिसर से निकलने वाले इस्राएली ही थे, उसी वचन को विस्तार दिया जिसका उसने अभी अभी हवाला दिया था। परिणाम यह हुआ कि वे अपने आज्ञा न मानने और अविश्वास के कारण (यानी वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में नहीं जा पाए; आयत 11) जंगल में मर गए और "उसके विश्राम" में प्रवेश नहीं कर पाए। पूरी पीढ़ी ही जंगल में अपने पाप के कारण नाश हो गई।

पाठकों के लिए वचन की प्रासंगिकता। (पढ़ें 4:1-11.) अध्याय 4 का अगला भाग मूल पाठकों के लिए वचन की एक प्रासंगिकता है। इस वचन का आरम्भ "उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है" शब्दों के साथ होता है। लेखक ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि हमारी तरह ही इस्राएलियों को "शुभ समाचार" सुनाया गया था। परन्तु उन्होंने अपने अविश्वास के कारण उन प्रतिज्ञाओं से जो उन्हें मिली थीं लाभ नहीं उठाया (4:2)।

इस्राएली लोग विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाए इस कारण प्रतिज्ञा किया हुआ विश्राम पूरा होना आवश्यक है। भजन संहिता 95 में परमेश्वर ने अपने विश्राम की बात की, जो सृष्टि के समय आरम्भ हुआ (4:3, 4) और दाऊद के द्वारा बोले जाने के समय भी था (देखें इब्रानियों 4:5)। दाऊद, ने जो मूसा और यहोशू के लगभग चार सौ साल बाद हुआ मसीह से एक हज़ार साल पहले इस बात की पुष्टि की कि कुछ लोग परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे। उसकी भविष्यवाणी से यह संकेत मिला कि परमेश्वर का विश्राम अभी भी था (क्योंकि इस्राएलियों को यह नहीं मिला था; 4:8)। दाऊद ने यह कहते हुए कि "अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो" (भजन संहिता 95:7, 8) वर्तमान काल और "आज" शब्द का प्रयोग किया। यह विश्राम उसके समय में था और पहली सदी में मसीही लोगों के लिए भी था। इसके अलावा यदि यह आरम्भिक मसीही लोगों के लिए था तो आज हमारे लिए भी है। इसलिए इब्रानियों 4:1-10 में लेखक के तर्क का मुद्दा यह है कि हमें वह करने का अवसर मिला था जिसे इस्राएली नहीं कर पाए। हम परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश कर सकते हैं!

वह विश्राम क्या है? इसे "सब्त का विश्राम" (4:9) कहा जाता है, पर यह सब्त का दिन नहीं है। इसके बजाय यह स्वर्ग है क्योंकि केवल स्वर्ग में जाने पर ही हमें अपने कामों से वैसे विश्राम मिलेगा जैसे परमेश्वर ने किया था (4:10; देखें प्रकाशितवाक्य 14:13)।

परन्तु जिस प्रकार इस्राएली लोग अपने विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाए वैसे ही मसीह के चेले स्वर्गीय विश्राम में प्रवेश करने में नाकाम रह सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि मसीही लोगों को परमेश्वर की ताड़ना की आवश्यकता थी कि "अपने हृदयों को कठोर मत करो।" आज भी हमें उसी ताड़ना की आवश्यकता है जो 4:11 में लेखक ने इन भाइयों को दी थी: "सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें ऐसा न हो, कि कोई जन उनकी नाईं आज्ञा न मानकर गिर पड़े।"[2]

सारांश

प्रवचन की समाप्ति ताड़ना और प्रेरणा के साथ होती है (पढ़ें 4:11-13): "उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें"-यह स्वर्ग में मसीही व्यक्ति का विश्राम है। अगली दो आयतों के द्वारा प्रेरणा दी गई है। विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न क्यों करें? क्योंकि परमेश्वर का वचन "जीवित और प्रबल" और चौखा है और मनुष्य के हृदय को जांच लेता है। 4:12, 13 में कही गई बात परमेश्वर के वचन के लिए ही है और यह बाइबल के लिए भी है जो आज परमेश्वर का वचन है। इस आयत में ज़ोर इस तथ्य पर हो सकता है कि अध्याय 3 में दोहराई गई वचन की दाऊद की बात बिल्कुल सही और विश्वसनीय है। पहली सदी के मसीही लोगों को यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि वे प्रयत्न कर रहे हैं, या वे इस बात को पक्का जान सकते थे कि उनका हाल बेवफ़ा इस्राएलियों वाला ही होना था।

प्रासंगिकता

हम इस प्रवचन को अपने जीवनों में कैसे लागू कर सकते हैं? इसमें हम कम से कम तीन नियमों को जांच सकते हैं:

विश्वासत्याग की सम्भावना। कुछ लोगों के विचार के विपरीत, विश्वास को छोड़ना सम्भव है। मसीही लोग इस प्रकार से पाप कर सकते हैं कि वे अनन्तकाल के लिए नष्ट हो जाएं। यदि विश्वासत्याग असम्भव होता तो इब्रानियों की पुस्तक का कोई औचित्य नहीं होना था। मसीही व्यक्ति के लिए उद्धार सशर्त है। जंगल में गिर जाने वाले इस्राएलियों का नमूना इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है।

विश्वासत्याग का कारण। ये आयतें यह भी बताती हैं कि विश्वासत्याग का मुख्य कारण अविश्वास है। इस्राएलियों के बेदीन होने या विश्वासत्याग के वर्णन के लिए कई अलग-अलग शब्द इस्तेमाल किए गए थे। जैसे उन्होंने अपने हृदयों को कठोर करके परमेश्वर को क्रोध दिलाया (3:8); वे अपने मनों में गुमराह हो गए (3:10); उन्होंने पाप किया (3:17); वे आज्ञा न मानने वाले थे (3:18; 4:6 भी देखें)। परन्तु उनकी मुख्य समस्या अविश्वास की थी: "वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके" (3:19; 3:12 और 4:2 भी देखें)। उनकी कहानी को याद करें। अन्य बातों में उन्होंने लाल समुद्र के सामने आने पर शिकायत की। उन्होंने शिकायत की कि क्योंकि उनके पास पानी नहीं था, उन्होंने शिकायत की क्योंकि उनके पास खाना नहीं था और उन्होंने कनान में प्रवेश करने से इनकार कर दिया क्योंकि उन्हें डर था। हर मामले में उनकी नाकामी विश्वास की नाकामी थी! वास्तव में वे आज्ञा न मानने वाले लोग थे; परन्तु उनका आज्ञा न मानना उनके अविश्वास का परिणाम था।

यही बात हमारे लिए भी हो सकती है। हो सकता है कि हम विश्वास न करते हों कि हमें परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है और अपने लक्ष्यों को अपने आप ही पूरा करने की कोशिश करते हैं। हो सकता है कि हमें विश्वास न हो कि परमेश्वर ने जो कह दिया उसका अर्थ वही होता है। विश्वास की कमी हम से वह करवाती है जिसकी परमेश्वर मनाही करता है या वह करने में नाकाम बनाती है जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें। अविश्वास ही विश्वासत्याग का मुख्य कारण है।

विश्वासत्याग की रोक। इन आयतों से हम विश्वासत्याग को रोकने का ढंग भी सीख सकते हैं। इन आयतों से पता चलता है कि गिरने से बचने के तीन तरीके हैं: (1) "हमें डरना चाहिए ..." (4:1)। अपने आपको गिरने से रोकने के लिए हमें पता होना आवश्यक है कि हम गिर सकते हैं और विश्वासत्याग के परिणामों से डरना चाहिए। (2) "... प्रयत्न करें" (4:11)। गिरने से बचने के लिए हमें विश्वासयोग्य बने रहने के लिए पूरी कोशिश करनी अर्थात पूरा ज़ोर लगाना आवश्यक है। (3) "एक-दूसरे को समझाते रहो ..." (3:13)। गिरने से बचने के लिए हम में से हर एक को विश्वासयोग्य बने रहने के लिए दूसरों को प्रोत्साहित करना और प्रभु के साथ बने रहने के लिए हमें उन्हें अनुमति देना आवश्यक है। *फिर, गिरने से बचने के लिए, हमें तीन बातें करनी आवश्यक हैं:* (1) *विश्वासत्याग की सम्भावना का पता होना,* (2) *व्यक्तिगत लगन, और* (3) *एक-दूसरे को समझाना।*

सारांश

इब्रानियों की पुस्तक के कुछ आरम्भिक पाठकों की तरह यदि आप मसीह से गिर गए हैं, तो आपको यह पता होना आवश्यक है कि आप कभी भी परमेश्वर से इतनी दूर नहीं गिर सकते कि आप उसके पास लौट न सकें! जब तक आप अपने पापों से मन फिरा लेते हैं, परमेश्वर आपको वापस स्वीकार कर लेगा, आप चाहें कितनी भी दूर क्यों न गिरे हों! वापस आने के लिए आपको केवल अपने पापों से मन फिराना (प्रेरितों 8:22), अपने पापों को मान लेना (1 यूहन्ना 1:9), और अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करना पड़ेगा (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16 भी देखें)। यदि आप गिर गए हैं तो उड़ाऊ पुत्र के नमूने पर चलकर (लूका 15) आज ही अपने पिता के पास लौट आएं!

टिप्पणियां

[1]अभी अभी उद्धृत किए गए भजन से दोहराते हुए इस आयत में जोड़ा गया है "जैसा कहा जाता है कि यदि आज।" "आज" कब तक कहा जाता है? भजन संहिता 95 और इब्रानियों 3 के दृष्टिकोण से और परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह हमेशा "आज" ही रहता है; इसलिए हमें एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए। [2]जंगल में इस्राएलियों के विश्वासत्याग के ऐसे ही उदाहरण के इस्तेमाल के लिए, कि मसीही लोगों को उनके नमूने का अनुसरण न करने की चेतावनी मिले, देखें 1 कुरिन्थियों 10:1-12.